Vol 2 Issue 4 Jan 2013

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

Review Of Research
Vol.2, Issue.4, Jan. 2013
ISSN:-2249-894X
Available online at www.reviewofresearch.net

ORIGINAL ARTICLE

संत साहित्य और जीवन मूल्य

भगवान आदटराव

संतोष भीमराव पाटील महाविद्यालय , मंद्रुप, तह. द. सोलापुर, जि. सोलापुर.

सारांशः

नैतिक मूल्यों का मानव जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। आधुनिक युग में मनुष्य नैतिक मूल्यों को बलिवेदी पर चढाने के लिए उतावला हो चुका है। हर कोई उसका महत्त्व तो मानता है लेकिन जब उसे अपनाने की बात आती है तब उसे टालने की कोशिश की जाती है। मनुष्य का अपने मन तथा इन्द्रियों पर विश्वास नहीं है। कर्म किए बिना लाभ की अपेक्षा की जाती है। वर्तमान नैतिक मूल्यों के संदर्भ बदल गए है। आज बेईमानी हो चुकी है, भ्रष्टाचार, शिष्टाचार बन चुका है। हर कोई शॉर्टकट का समर्थन करता है। नैतिक मूल्य मानव के अंतर्निहित सौंदर्य में श्रीवृध्दि करते हैं। हमारे सामाजिक जीवन को श्रध्दा, दया, दान, ममत्व अहिंसा आदि मूल्यों से परिपुष्ट कर हमें जीने योग्य बनाते हैं, जिससे आत्मविश्वास जाग उठता है।

प्रस्तावना :–

हिंदी साहित्य में प्राचीन काल से नैतिक काव्य का निरूपण होता आया है। भक्तिकाल को हिंदी साहित्य का 'स्वर्णयुग' भी कहा जाता है। किसी भी जाति की श्रेष्ठ भावनाएँ उसके धार्मिक विश्वासों में रहती है। इसलिए जो साहित्य धर्म की ठोस भूमि पर स्थिर हो, उसे उस जाति का श्रेष्ठ और अमर साहित्य कहते हैं। हिंदी साहित्य के भक्तियुग का साहित्य हमारी जाति की श्रेष्ठ धार्मिक भावनाओं को लेकर चलता है। इस साहित्य में अभिव्यक्त आदर्श हमारे धार्मिक आदर्श है। इसीलिए इस साहित्य का हमारे जीवन में आज भी महत्त्व है।

इस काल का प्रमुख विषय भक्ति रहा है। भक्ति का स्वरूप कभी भी अनैतिकता पर टिका हुआ नहीं रहता है। रामभक्ति, कृष्णभक्ति, ज्ञानाश्रयी, प्रेमाश्रयी शाखाओं ने भक्ति के द्वारा नैतिक विचारों का ही समर्थन किया है।

इस काल के कवि 'भक्त' पहले थे और बाद में 'कवि' इसीलिए उन्हें 'भक्तकवि' के ही नाम से पहचाना जाता है। भक्तिकालीन नैतिक काव्य के तीन स्वरूप प्राप्त होते हैं–

1) कबीर, नानक, दादू आदि निर्गुणोपासक संतों की रचनाओं में नीतिसंबंधी पद धर्मोपदेशों के अंग रूप में कहे गये हैं।
2)रामचरितमानस, पद्मावती आदि प्रबन्ध काव्यों में यंत्र – तंत्र नीति सम्बधी उपदेश मिलते हैं।
3) कुछ कवि ऐसे भी हैं जिन्होंने संपूर्णतः नीति काव्य की ही रचना की है। उस वर्ग के प्रमुख कवि जैन मतावलम्बी है।

इस धारा की प्रमुख उल्लेखनीय रचना जैन कवि पद्मनाभन की 'डुंगरबावनी' है, जिसका नामकरण कवि ने अपने आश्रयदाता डुंगर सेठ के नाम पर किया है।

गोस्वामी तुलसीदास के आदर्शवाद काव्य से तो सारा संसार सुपरिचित है। तुलसीदास के 'रामचरित मानस', 'विनय–पत्रिका', 'कवितावली', 'वैराग्य–संदीपनी' आदि रचनाओं में नैतिक उपदेश प्र्याप्त मात्रा में मिलते हैं। दोहावली संग्रह का प्रयोजन ही नैतिक उपदेश लगता है। जैसे, अभिमान मनुष्य को दुःखी बनाता है–

'हम हमार बड़, भूरि भार धारि सीस।
हठि सठ परबस परत, जिमि, करि कोस कृमि कीस।।

तुलसीदास ने अहिंसा का समर्थन किया है। उनके अनुसार इसके बिना शान्ति असंभव है। कोधियों का जन

समूह क्षमाशील व्यक्ति का कुछ बिगाड नहीं सकता है। स्वार्थलोलुप नरकगामी होता है।

ऊँचे पद पर रहकर आज्ञा देना और सेवा करना तो सभी चाहते हैं लेकिन सज्जन वही होगा जो आज्ञा पालन और सेवा में रत हो। दान ठीक है लेकिन कपटपूर्वक किया दान किसी का हित नहीं करता दोहावली के अधिकत्तर दोहे तो ऐसे ही है। जिनके अध्ययन से ह्रदय में उथल–पुथल, क्रूरता, कपट आदि जघन्य भावों का नाश होता है और वीरता, सज्जनता, निरभिमानता मैत्री, समता, निष्कपट प्रेम, अनन्य प्रेम, संतोष, क्षमा आदि गुणें के प्रति आदर अहिष्णुता, निस्वार्थता, परोपकार संगठन, आज्ञाकारिता, विवके आदि उदात्त भावों का उन्मेष होता है।

दोहावली के अतिरिक्त अन्य रचनाओं में भी नैतिकता व्यक्त हुई है। तुलसीदास की रत्नावली के दोहे भी नैतिकता से भरपूर है। वचनो में सत्यता, पडोसियों तथा सम्बधियो से अच्छा व्यवहार, जीवन की सफलता, सुमित्र – कुमित्र, धन–यौवन जनित मद, दीर्घ सूत्रता की निंदा, दुःख को पाप का फल समझकर दुःखी न होना और उसे निर्मलता का साधन मानना आदि अनेक सामान्य नीतियाँ भी मिलती है।

देविदास की कविता में राजनीति और सामान्य नीति की बातें मिलती हैं। कई कविता में कवि ने राजा के गुण, प्रजा के प्रति उसका व्यवहार, सेवकों के कर्तव्य आदि का सुंदर वर्णन किया है, वहाँ सर्वसामान्य के लाभार्थ, मित्रता की रक्षा के उपाय, कौन किसका मूल पुरूष का वास्ताविक शृंगार, भले और बुरे लोग, उपहासास्पद जन, किस से किस वस्तु का नाश, दानी कृपण संवाद आदि विषयों को बहुत की मनोहर ढंग से उपस्थित किया है।

सुदरदास के 'पंचेद्रिय चरित' में पाँच ज्ञानेंद्रिय की उच्छृंखलता पर पाँच कथाएँ है। जनकवि का 'सतवंती' एक कथात्मक नैतिक काव्य है। गुरू सेवा बिना ज्ञान, ध्यान एवं तप संभव नहीं है। वाजिन्द के 'अरिल' में दानन, कृपणता, साधु–संगति दृष्ट–स्वभाव, मनोनिग्रह आदि अनेक नैतिक विषय से संबधित छंदहै। बाण के 'साशदोष कलियुग के माथे मढ़ दिया गया है। राजसमुद्र कुशलधीर और लाल के काव्य में भी नैतिकता मिलती है।

भक्तिकालीन नैतिक काव्य में अकबरी दरबार के काव्य का महत्त्वपूर्ण योगदान है। सम्राट अकबर को हिंदी भाषा से प्रगाढ अनुराग था। तत्कालीन राजभाषा यद्यपि फारसी थी तथापि नित्य के व्यवहार में हिंदी का ही प्रयोग होता था। वे न केवल हिंदी कवियों का अपने दरबार में सम्मान करते थे वरन् स्वयं भी हिंदी व फारसी में काव्यरचना करते थे। अकबरी दरबार में जिन हिंदी कवियों को विशेष सम्मान प्राप्त था, वे हैं चतुर्भुजदास, आसकरण, पृथ्वीराज, मनोहर, टोडरमल नरहरि, बिरबल, ब्रह्म, गंग, तानसेन, और रहिम अकबरी दरबार के कवि नैतिक आचरण को महत्त्व देनेवाले अकबर के समान ही थे। महापात्र नरहरि का अधिकांश नैतिक काव्य छप्पय छंद में है। राजा टोडरमल को नीति–काव्य की रचना में विशेष रूचि थी। वे मुख्य रूप ये शृंगारी तथा भक्त कवि थे। शुध्द नीति के पद्य तो इने – गिने ही हैं। गंग के नैतिक काव्य की सीमा व्यापक है।

नैतिक काव्य कें क्षेत्र में रहीम की भूमिका असाधारण है। 'रहीम की दोहावली' नैतिक काव्य की एक उत्तम रचना है। सम्राट अकबर का दरबार धन्य था जिसमें रहीम जैसे श्रेष्ठ नीति कवि को प्रश्रय मिला।' जिसके कारण भारतीय जनता रहीम की सुंदरम नीतियों को जीवन में चरितार्थ अवसर पा सकी । रहीम कटुभाषियों के लिए दण्ड के समर्थक थे। रहीम के अधिकतर दोहों का सम्बन्ध सामाजिक व्यवहार से है। समाज कैसा है, उसके व्यक्ति कैसे प्रसन्न किए जा सकते हैं, जगत से प्राप्त गौरव का वास्ताविक मूल्य क्या है? स्वार्थ–सिध्दि के लिए हाँ में हाँ मिलाना जरूरी है, हितैषी तथा शत्रू की पहचान क्या है, मनुष्यों को कैसे वश में किया जा सकता है, आत्म–सम्मान, परोपकार, कुसंगति, सुसंगति, सुमित्र, कुमित्र, मूर्ख, सुजन, दुर्जन, प्रेम आदि सैंकडो उपयोगी बातों का रहीम नें अनुभूति–पूर्ण उल्लेख किया है।

निर्गुण भक्ति में मुख्यतः ज्ञानाश्रयी तथा प्रेमाश्रयी शाखा के कबीर, जायसी, रैदास, नामदेव, गुरू नानक, दादू–दयाल, मलुकदास कुतुबन, मंझन आदि प्रमुख है। कबीरदास सत्य की श्रेष्ठा स्वीकार करते हुए उसे पुण्य से भी बड़ा मानते है। उनके अनुसार–

''सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जके हिदय सांच है, झूठ बराबर पाप।''

कबीरदास स्वप्न में भी असत्य से दूर रहने को कहते हैं। सत्य की पूर्ण अनुभूति असत्य से विरक्ति निर्माण करती है। अच्छे–बुरे का फल तत्काल मिलता है। सद्‌गुरू की महिमा अनंत है। साधु संगति से ह्रदय पवित्र हो जाता है।

रैदास ईश्वर की आराधना के लिए पत्ती तोड़ने को भी हिंसा मानते है। संत कवि दादू दयाल मांसाहरी और शराबी लोगों का ईश्वर चरणों में लीन होना कठीन मानते हैं।

इस शाखा के भक्त कवि तीर्थ, व्रत, रोजा, जीवहिंसा, नमाज आदि बाह्य आडंबरो से दूर रहने की सलाह देते हैं। ये धर्म भेद, साम्प्रदायिकता, जाति–पाँति, ऊँच–नीच, छुआ–छूत, आदि को नहीं मानते थे। ये सन्त निराकार के उपासक थे, अवतारवाद, मूर्ति–पूजी आदि के विरोधी थे तथा निर्गुण राम की भक्ति और सात्विक जीवन के प्रचारक थे। ये हिंदू और मुसलमान दोनों ही धर्मों के मूलतत्वों, ईश्वर–विश्वास, सत्यप्रियता, दया, क्षमा, परोपकार आदि में आस्था रखते थे परंतु जीवहिंसा, तीर्थ, व्रत, रोजा नमाजादि बाह्य आडंबरों से दूर रहने का अनुरोध करते थे। ये धर्म भेद, सम्प्रदाय वाद, वर्ण, जाति–पाँति, ऊँच–नीच छआछूत आदि को हेय मानते थे। यद्यपि वे स्वयं शिक्षित न थे तथापि साधना और सदाचार के धनी थे। और यही सदाचार नैतिकता के साथ व्यक्त हुआ है।

प्रेमाश्रयी शाखा में प्रेम की महत्ता स्वीकार की गई है। इस शाखा में सूफी कवियों का प्राबल्य रहा है। सूफी मत

के सिध्दान्तो को इस सम्प्रदाय के कवियों ने लोकप्रिय प्रेमगाथाओं के माध्यम से अभिव्यक्त की है।

सगुण भक्ति के अंतर्गत रामभक्ति तथा कृष्णभक्ति से सम्बन्धित भक्ति आती है। सगुण कवियों में तुलसीदास तथा सूरदास के साथ–साथ नाभादास, अग्रदास, केशवदास, ह्रदयराम, परमांनददास, हरिदास, व्यास, मीराबाई, रसखान, नरोत्तमदास और वृन्ददास आदि का उल्लेख किया जा सकता है।

रामकाव्य के प्रमुख विषय श्रीराम ही है। श्रीराम के आदर्शों को प्रस्तुत कर रामभक्त कवियों ने समाज के सामने आदर्शवाद की नींव रखी। रामकाव्य में अधिकांश रूप में पारिवारिक तथा सामाजिक नैतिकता व्यक्त हुई हैं। इसमें पारिवारिक जीवन को स्वर्गमय बनाने हेतु नीतियों तथा गुणों पर प्रकाश डाला है।

कृष्णकाव्य के मुख्य विषय श्रीकृष्ण है। कृष्ण–भक्त कवियों ने कृष्ण की बाल–लीला, विनय, भ्रमरगीत आदि से सम्बन्धित काव्य लिखा। ललित चर्चा होने के कारण नैतिक मूल्यों को अधिक स्थान नहीं मिल सका है। परंतु प्रसंगवरूप नैतिक मूल्य मिलते हैं।

इस प्रकार मानव जीवन में नैतिक मूल्यों का महत्वपूर्ण स्थान है। मानव को नियंत्रित करनेवाली एक अप्रत्यक्ष शक्ति होती है। उसे पिता, विधाता कह सकते है। जिसे ईश्वर नाम से भी पहचाना जाता है। यह ईश्वर पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, दिशा, आकाश चेतन, अचेतन, बाहर, भीतर, सभी स्थानों में व्याप्त है।

वह एक ऐसी शक्ति है जिसका अस्तित्व मानव स्वीकारता है। उसी का डर मनुष्य प्राणियों को नैतिकता से बाँधता है। ईश्वर इस जगत का माता, पितामह, पवित्र वस्तु, पोषणकर्ता, स्वामी, मित्र अविनाशी है। दन्द्रियों से मन श्रेष्ठ होता है, मन से बुध्दि श्रेष्ठ होती है, बुध्दि से ज्ञान श्रेष्ठ होता है, और ज्ञान से ईश्वर श्रेष्ठ होता है।

ईश्वर सत्यम्, शिवम, सुदरम् है जिसका न आदि है, न मध्य है और न अन्त। इसी ईश्वर की आराधना के बल पर वर्तमान समाज की नैतिकता टिकी हुई है।

संदर्भः–

1.मध्यकालीन हिंदी काव्य में भारतीय संस्कृति – मदनगोपाल गुप्त
2. मध्ययुगीन भारतीय समाज एवं संस्कृति– डॉ. चौबे झारखंडे
3. कबीर की विचारधारा– डॉ. गोविंद त्रिगुणायत
4. भक्तिकाल के प्रमुख कवियों का मूल्यांकन– डॉ. ओमप्रकाश त्रिपाठी

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org